एक ऐसी युक्ति जिससे होगा कल्याण

कलियुग के अंतिम चरण में, अज्ञान रूपी रात्रि में, जब परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होते हैं तब वे मनुष्यमात्र को यह शिक्षा देते हैं कि - ``काम-वासना का भोग एक जीव-घातक विष लेने के सामन है जिससे कि मनुष्य का जन्म-जन्मान्तर का सर्वनाश होता है। अतः ज्ञान रूपी सोम अथवा अमृत निराकार परमात्मा शिव, जिन्हें ही `सोमनाथ' और `अमरनाथ' भी कहा जाता, इस संसार सागर से सारा विष हर लेते हैं। इसी कारण उन्हें `विष-हर' भी कहा गया है।

परमात्मा शिव के उसी कर्त्तव्य की स्मृति में आज भी लोग जब शिवरात्रि का उत्सव मनाते हैं तब ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हैं। वैसे भी जो शैव लोग प्रसिद्ध पाशुपत व्रत रखते हैं तो वे नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं। जो मनुष्य 12 वर्ष तक निरंतर नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का पालन करता है, उसे पाशुपत व्रत का बहुत फल मिलता है- ऐसी शैव लोगों की मान्यता है। पाशुपत व्रत रखने वाले शैव लोग ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने के अतिरिक्त, शिव की याद में रहने का अभ्यास करते हैं तथा जो वस्तुएँ उन्हें सर्वाधिक प्रिय हैं उन्हें शिव को अर्पित करते हैं और शिव की सेवा में रहने का पुरुषार्थ करते हैं- उपरोक्त बातें मुख्य रूप से उनके व्रत में शामिल हैं।

- ब्र. कु. गंगाधर

वर्तमान समय शिवरात्रि का समय है

अब विष को छोड़कर शिव से प्रीति जोड़ो!

ऊपर हमने `रात्रि' का जो अर्थ बताया है, उससे स्पष्ट है कि अब कलियुग का जो अन्तिम चरण चल रहा है, यह सारा काल `रात्रि' अथवा `महारात्रि' ही है। हम सभी नर-नारियों को यह शुभ-संदेश देना चाहते हैं कि अब परमपिता परमात्मा शिव संसार को पावन तथा सुखी बनाने के लिए फिर से प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर ज्ञानामृत पिला रहे हैं और वास्तविक सहज राजयोग भी सिखा रहे हैं। चूंकि कलियुगी सृष्टि के विनाश में बाकी थोड़ा समय है, इसलिए अब हम सबका कर्त्तव्य है कि उनकी आज्ञानुसार हम नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का पालन करें और शिव के अर्पण होकर संसार की ज्ञान-सेवा करें। वास्तव में यही सच्चा पाशुपत व्रत है जिसका फल मुक्ति और जीवनमुक्ति की प्राप्ति माना गया है। अब मनुष्य को चाहिये कि विकारों रूपी विष से नाता तोड़कर परमपिता परमात्मा शिव से वह अपना नाता जोड़े। वास्तव में शिवरात्रि केवल एक दिन नहीं होती बल्कि जब तक शिव परमात्मा इस अज्ञान-रात्रि में अपना कर्त्तव्य कर रहे हैं, यह सारा समय ही शिवरात्रि है जिसमें कि मनुष्यात्मा को ज्ञान द्वारा ही जागरण मनाना चाहिए, शिव परमात्मा की स्मृति में स्थित होना चाहिए तथा ब्रह्मचर्य व्रत का सहर्ष पालन करना चाहिए। शिवरात्रि का त्योहार मनाने की यही सच्ची रीति है।

शिवरात्रि ही हीरे-तुल्य जयन्ती है

चूंकि शिव ही ज्ञान के सागर, शान्ति के सागर, आनंद के सागर, प्रेम के सागर, परमपिता परमात्मा हैं, जोकि कलियुग के अंत में पशु-तुल्य आत्माओं को माया के पाशों से छुड़ाकर मुक्त करते हैं तथा ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग द्वारा मनुष्य को देवता बनाते तथा सतयुगी पावन सृष्टि की पुनः स्थापना करते हैं, इसलिए `शिव जयंती' ही सर्वोत्तम त्योहार है। यह सभी आत्माओं के परमपिता का जन्मोत्सव है जिसे सभी देशों में धूमधाम से मनाया जाना चाहिये। चूंकि शिव ही कलियुग के अंत और सतयुग के आदि के संगम समय सभी मनुष्यों का जीवन कौड़ी-तुल्य से बदल कर हीरे-तुल्य बनाते हैं, इसलिए शिवरात्रि ही हीरे-तुल्य जयन्ती है, परन्तु आज स्वयं भारतवासी भी शिवरात्रि के इस महात्म्य को नहीं जानते तो और देशों के लोग भला कैसे जानेंगे...!

हमारी नवीनता से लोगों को मिलेगी नूतनता

विचार सागर मंथन करना मुझे तो बहुत अच्छा लगता है, इससे बहुत फायदा है, सबसे बड़ा फायदा कि कोई और विचारों में लटकेंगे, अटकेंगे नहीं। सागर को मंथन करने से मोती मिलते हैं। ऊपर-ऊपर से करेंगे तो सिर्फ कौड़ियाँ ही मिलती हैं, वह भी सच्ची होती हैं। पैसा झूठा हो सकता है, नोट दूसरा हो सकता है लेकिन कौड़ी झूठी नहीं हो सकती। शंख जो होता है वह सागर की रचना है इसलिए उसका आवाज़ कितना दूर-दूर तक गूंजता है। विचार सागर मंथन से लगेगा यह सागर की रचना है। कोई और बात का विचार न अपने लिये आता है, न किसी और के लिए आता है। शान्त रहने से कुछ अच्छा माल मिलता है, वायब्रेशन मिल जाते हैं। सोचने में नहीं मिलता है इसलिए मैं अपने को इन सबसे फ्री रखती हूँ। मेरी दिल होती है आप भी ऐसे बार-बार मीटिंग नहीं करो, क्या ज़रूरत है! फ्री रहो। हाँ, फैमिली फीलिंग की मीटिंग ज़रूरी है क्योंकि परिवार है।

विचार सागर मंथन करके प्रैक्टिकल जीवन के परिवर्तन से नवीनता का अनुभव करो। मेरे में नवीनता आयेगी तो औरों को प्रेरणा मिलेगी। यह गुप्त बात है, अगर हम अभी करेंगे ना, भले पहले इतना पुरुषार्थ नहीं किया है, बाबा रहमदिल है, फ्राकदिल है उसका फायदा लो। विचार सागर मंथन जल्दी-जल्दी में नहीं होता है, विचार सागर मंथन करने से राइट टाइम पर राइट टचिंग आयेगी, यह भी भाग्य है। इससे स्व सेवा और सर्व की सेवा होगी। अगर ज़रा भी मैं दुःख महसूस करने वाली आत्मा हूँ, तो मैं दूसरे का दुःख दूर नहीं कर सकती हूँ। लाइट रहने से औरों को लाइट अनुभव होगी, हल्कापन लगेगा। 5 हो या 50 हो या 500 हो, पर बाबा की लाइट लाखों करोड़ों को मिल रही है।

कोई बीमारी है तो आश्चर्य नहीं खाना है, यह क्यों? यह हिसाब-किताब सतयुग में नहीं होगा, दवाई है इसलिए क्यों न कहो। आयी है पास हो जायेगी, अगर बीमारी को सोचते हैं तो बैठ जाती है, जाती नहीं है। कई हैं जो डॉक्टर और दवाइयाँ बदलते रहते हैं, बहुत खर्चा करने के बाद भी कुछ नहीं होता है, पर कोई हैं जो बीमारी को खुद ही भगा लेते हैं। बाबा को सर्जन के रूप में देखो, वो जाने उसका काम जाने, वह इंजेक्शन लगा करके अशरीरी बना देता है।

बाबा कहता है कोई बोझ हो, कोई संकल्प हो तो तुम सिर्फ मुझे दे दो, ताकि तुम साफ रहो। साफ रहेंगे तो सेफ रहेंगे। माया छुयेगी भी नहीं, पर कर्मभोग, थोड़ा ब्लड प्रेशर हाई हुआ,...परेशान हो जायेंगे। अरे, परेशान क्यों होते हो? प्रेशर परेशान होने से होता है। शान में रहने से नहीं होता है, यह नवीनता लाओ ना, क्या बड़ी बात है। तो ऐसे एक दो से सीखने की भावना हो, तो कभी भी हमको तकलीफ नहीं होगी। न मेरे से किसी को तकलीफ हो, न मेरे को तकलीफ हो। किसी को शान्ति प्रेम भले मिले, जितना मिले पर थोड़ा भी कोई मेरा एक शब्द या मेरा रहन-सहन किसी को तकलीफ न दे। यह पुण्य के खाते में जमा होगा। कर्मों का हिसाब-किताब चुक्तू हो जायेगा।

तो बाबा यह विधि सिखाता है, महिमा करके योग्य बनाना। बाबा के काम का योग्य बनाना, मैं इस काम के लिए हूँ क्या? अरे, क्या भाषा बोली? सम्भल के बोलो क्योंकि स-

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

`गमयुग पर एक-एक बोल अमूल्य है। ऐसे बाबा का एक-एक बोल अनमोल है, ऐसे हमारी भी बहुत वैल्यू है। जो पुरुषार्थ करना है, अब करना है, मुझे करना है, समय करा रहा है, बाबा करा रहा है। कोई बड़ी बात नहीं है। गुप्त पास विथ ऑनर में आना है। क्या समझा है? कोई समझे ना समझे ल-`किन बाबा तो समझता है ना। अगर हम खज़ानों को सम्भाल के नहीं रखते हैं तो उसे प्राप्ति की कदर नहीं होती है। जहाँ किचड़ा होता है वहाँ कीड़े पैदा हो जाते हैं। ऐसे ही थोड़ा भी हमारे अंदर किचड़ा होगा तो औरों को बीमारी पैदा करेगा इसलिए स्थूल, सूक्ष्म अंदर बाहर से सफाई रखो क्योंकि मैं कोई डस्टबीन नहीं हूँ। कोई भी किचड़ा है मन या तन का, तो वो इधर-उधर नहीं फेंको क्योंकि यह भी ईश्वरीय कायदे हैं ना। ईश्वरीय कायदे प्रमाण चलो तो सब ठीक है। आजकल दुनिया में लव का दिवाला है, न लव देना जानते हैं न लव लेना जानते हैं वह कायदेसिर क्या चलेंगे? लवफुल ही लॉफुल होते हैं। मैं शरीर छोड़ूँ तो क्या याद करेंगे, थी तो अच्छी परंतु...यह नहीं चाहिए, वो यादगार नहीं है। तो दातापन के संस्कार इमर्ज करके ब्राह्मणों को स्नेह और सम्मान से प्यार दो और अपने से आगे रखो।

बाबा का संकल्प, हमारा हो कायाकल्प

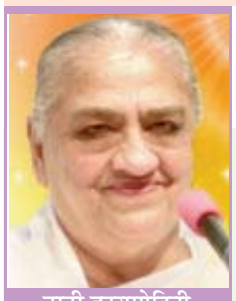

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

अभी सभी बाबा की याद में बाबा की बातें सुनने के लिए इकट्ठे हुए है। अभी सबके सूरत में बापदादा की याद दिखाई दे रही है और हरेक को कितनी खुशी है क्योंकि बाबा कहता है कि खुशी जैसी खुराक और है ही नहीं। अगर खुराक खाना है तो खुशी, तो आप सब तो सदा खुश रहते ही हैं। तो आप खुराक खाते ही हैं, आज देखो बाबा की मुरली का ही वर्णन कर रहे हैं। बाबा ने कितनी अच्छी समझानी दी है, बाबा कहते हैं कि आप बच्चे जब यहाँ हॉल में बैठते हो तो उस समय आपकी बुद्धि में क्या आता है? अभी बाबा आया कि आया, बाबा के महावाक्य सुनने के लिए आये हैं। तो सबकी बुद्धि में बाबा के शब्द स्मृति में आते ही रहते हैं और इस स्मृति में रहने से कितना सुख और शांति का अनुभव होता है। सिर्फ सोचने से ही कितना अंतर पड़ जाता है तो आप सोचो, सोचने के बजाए जब हम वो रूप बन जाते हैं तो कितनी खुशी की बात! और सदा यही कोशिश करनी है कि जिस समय भी हम बाबा की बातें सुनाते हैं तो उस समय ऐसे लगे जैसे बाबा हमारे में सम्मुख हाज़िर नाज़िर होके अपनी याद दिला रहा है। और बाबा ऐसा मुस्कराता है जैसे सामने से ही देख रहा है और हमारे भाग्य को उदय कर रहा है।

बाबा कहता है बस, चलते-फिरते कुछ भी करते मुझे याद करो। और याद कितनी मीठी है बाबा कहने से ही मुख मीठा हो जाता है। तो आज भी हम सभी मिलके बाबा की याद में बैठे हैं और बैठ करके जो बाबा का संकल्प है कि इस दुनिया में यह पता पड़े कि हमारा बाबा कौन? और बाबा क्यों आया है, वो हम कर रहे हैं या नहीं कर रहे हैं वो भी बाबा रोज़ देखता है। तो आप सभी भी आज बाबा के आगे बैठे हैं, यह तो भाग्य है जो जब बाबा चांस देता है अपने सामने बैठके सुनने का और हम लोगों को भी कितना अच्छा लगता है, जब बाबा के सामने बैठते हैं और बाबा बोलते हैं तो ऐसे लगता है जैसे एक-एक शब्द बाबा का मेरे लिये स्पेशल है और मुझे ऐसा बनना है, दूसरे तरफ बुद्धि नहीं जाती है। अपने तरफ ही जाती है तो कितना मीठा अनुभव होता है। अभी आज भी उसी अनुभव को हम रिपीट कर रहे हैं और दिल में वाह बाबा, वाह बाबा वाह! की समृति कितनी प्यारी है, आपके भी अंदर बाबा आ गया ना। आप भी यही समझते हैं कि बाबा हमारे द्वारा बोल रहा है, तो अभी चलो बाबा के महावाक्य सुनें और सब कुमार या अधरकुमार भाई सब उमंग-उत्साह से बाबा का एक-एक बोल सुन रहे हैं लेकिन धारण करके उस पर चलने का दृढ़ संकल्प भी कर रहे हैं।

तो आप सभी भी किसकी याद में बैठे हो? मीठे बाबा, प्यारे बाबा की। ऐसे मीठे बाबा को याद करने से अंदर का कड़वापन आपेही निकल जायेगा। बाबा की हरेक बच्चे प्रति यही शुभ आश है कि यह मेरा एक-एक बच्चा बाप समान बनके निर्विघ्न रहे, रहते भी हैं और रहेंगे भी लेकिन एक-एक बच्चा विश्व कल्याण के कार्य में सदा मग्न है भी और सदा मग्न रहेंगे। तो बाबा आप सबकी शक्लें देख करके प्यार कर रहा है, वाह बच्चे वाह! कितना प्यार से सुनते हैं और प्यार से सुनते प्यार को दिल में समाते भी हैं और दिल में समाने से कभी भी देखो तो बाबा का प्यार ही दिखाई देता है, ऐसे है ना।

आजकल की मुरली का सार क्या है? बाबा कहते हैं कि बस, कुछ भी करो मुझे याद ज़रूर करो क्योंकि पाप कटने के लिए तो बाबा की याद ही चाहिए ना। तो हमारे कितने जन्मों के पाप इकट्ठे हैं और फिर अभी बाबा के याद में सब खत्म हो रहे हैं।